गाँधी विचार में राजनीति का आध्यात्मीकरण

✧ डॉ. (श्रीमती) शैफाली जैन

महात्मा गाँधी न तो एक दार्शनिक थे जिन्होंने गहन अध्ययन एवं मनन के पश्चात् एक सुव्यवस्थित दर्शन प्रस्तुत किया हो, न ही एक राजनीतिज्ञ थे जिन्होंने राजनीति को राजनीति मानकर एक नेता की भूमिका निभाई हो और न ही वे एक सन्त थे जिन्होंने इस जगत को मिथ्या मानकर अपने को ब्रह्म में लीन कर दिया हो लेकिन फिर भी ये कुछ न होते हुए भी यही सब कुछ थे। गाँधीजी ने अपने सम्पूर्ण जीवन में चाहे उसका स्वरूप राजनीतिक हो, आर्थिक या सामाजिक, नैतिक व न्याय को स्थान दिया।

गाँधी के आध्यात्मिक आदर्शवाद में ईश्वर, सत्य, नैतिकता, धर्म अहिंसा का विशेष स्थान था और इसे उन्होंने राजनीति में भी स्थापित करना चाहा। गाँधीजी ने यह धारणा गोपाल कृष्ण गोखले से ली। गोखले ने राजनीति में नैतिक मूल्यों को समाविष्ट करने की बात कही। प्राचीनकाल में धर्म या नीति को उच्च नैतिक मूल्यों के रूप में लिया जाता था। मनु, कौटिल्य तथा शुक्र ने अपने ग्रन्थों क्रमशः मनुस्मृति, अर्थशास्त्र तथा शुक्रनीति में राजनीति एवं धर्म के संबंध का उल्लेख किया है। मनु ने कहा 'स्वयं धर्म में रहते हुए, प्रजा के व्यवहार में धर्म को सुनिश्चित करना ही शासक का पवित्र कर्तव्य है। कौटिल्य की मान्यता है कि राज्य की संप्रभुता अवधारणात्मक रूप में धर्म व दण्ड में निहित है। गोखले ने राजनीति के आध्यात्मीकरण के लिए ''सर्वेन्ट्स ऑफ इण्डिया सोसायटी'' की स्थापना की। गाँधी ने स्वयं को गोखले का शिष्य माना और लिखा कि ''गोखले ने मुझे यह सिखाया है कि अपने देश से प्यार करने का दम भरने वाले प्रत्येक भारतीय का स्वप्न यह होना चाहिए कि देश के राजनीतिक जीवन का आध्यात्मीकरण किया जाए।''

गाँधी के राजनीति के आध्यात्मीकरण को समझने से पूर्व उनकी दृष्टि में धर्म क्या है ? यह समझना आवश्यक है। धर्म से उनका अभिप्राय किसी औपचारिक और रूढ़िगत धर्म से नहीं है वरन् विश्व के व्यवस्थित नैतिक अनुशासन से है। गाँधीजी 'धर्म' शब्द की जो व्यापक व्याख्या करते हैं, वह हमारी 'धर्म' शब्द की व्याख्या से भिन्न है। जब हम कहते हैं हिन्दू धर्म, सिक्ख धर्म, मुस्लिम धर्म, ईसाई धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म आदि तब हम गाँधीजी के अर्थों में संप्रदाय की बात करते है। उनके धर्म का अर्थ सम्प्रदाय नहीं है। धर्म का अर्थ है- सृष्टि के व्यवस्थित नैतिक शासक के प्रति आस्था। इसी धर्म की अवधारणा को गाँधीजी राजनीति में लाना चाहते थे। उनका उद्देश्य राजनीति को धार्मिक एवं आध्यात्मिक बनाना था। उनके लिए वह स्थिति बड़ी कष्टकर थी कि राजनीति में 'मैकियावली पद्धति' की प्रधानता हो अर्थात् धर्म रहित राजनीति का साम्राज्य हो तथा छल-छद्मयुक्त राजनीति की प्रधानता हो। उन्होंने अनुभव किया कि इस प्रकार की कुटिल राजनीति किसी भी दशा में उचित नहीं है।

गाँधीजी ने राजनीति और धर्म के बीच अटूट संबंध की स्थापना की। राजनीति के सन्दर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए माना कि राजनीति तमाम बुराईयों के बावजूद मनुष्य के लिए अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि यदि आज मैं राजनीति में हिस्सा लेता हुआ दिखाई पड़ता हूँ तो एक मात्र उसका कारण यही है कि राजनीति वर्तमान समय में हमें सांप की तरह चारों और लपेटे हुए है जिसके चंगुल से हम कितनी ही कोशिश क्यूँ न करें, नहीं निकल सकते। इसलिए उन्होंने उस सांप को बदलने की कोशिश की और कहा, मैं उस सांप से द्वन्द्व युद्ध करना चाहता हूँ। अतः मैं राजनीति में धर्म को लाना चाहूँगा।'' उन्होंने उपयोगिता के इस प्रसिद्ध सिद्धान्त को कभी स्वीकार नहीं किया कि धर्म व्यक्ति का निजी मामला है और इसलिए उसकी राजनीति से उसका कोई संबंध नहीं होना चाहिए। पाश्चात्य राजदर्शन में सम्पूर्ण मध्य युग राजनीति और धर्म को एक दूसरे के साथ जोड़ने का युग रहा है। लेकिन मध्ययुग व आधुनिक युग के सन्धिकालीन विचारक मैकियावली ने राजनीति और धर्म को इतनी कठोरता से अलग किया कि कुछ आलोचकों ने उसे अधार्मिक की संज्ञा दी।

गाँधी की दृष्टि में राजनीति, धर्म और नैतिकता की एक शाखा थी। उन्होंने राजनीति को शक्ति और सम्पत्ति प्राप्त करने के लिए संघर्ष नहीं माना। उन्होंने घोषणा की कि, ''मेरे लिए धर्म विहीन राजनीति मृत्यु जाल है क्योंकि उससे आत्मा का हनन होता है।'' गाँधीजी ने राजनीति की व्याख्या करते हुए कहा कि राजनीति तो लाखों पद-दलितों को सुन्दर, जीवन-यापन योग्य बनाने, मानवीय गुणों का विकास करने, उन्हें स्वतन्त्रता, बन्धुत्व तथा आध्यात्मिक गहराइयों और सामाजिक समानता के बारे में प्रशिक्षित करने का प्रयास है। एक राजनीतिज्ञ, जो इन उद्देश्यों के लिए कार्य करता है, धार्मिक हुए बिना नहीं रहा सकता। उनकी दृष्टि में राजनीति में प्रवेश का अर्थ था सत्य और न्याय की प्राप्ति की दिशा में अग्रसर होना।

राजनीति को धर्मानुमोदित मानने से गाँधीजी का अभिप्राय यह नहीं था कि राजसत्ता धर्माधिकारियों के हाथों में सौंपी जानी चाहिए अथवा राज्य को किसी धर्म विशेष या संप्रदाय विशेष का प्रचारक बनना चाहिए। गाँधीजी ने जो आदर्श सर्वोदय समाज व्यवस्था प्रस्तुत की उसमें राज्य न तो किसी धर्म का संरक्षण करे और न किसी धर्म के उचित विकास में बाधक हो। गाँधी का आग्रह था कि राजनीति का आधार धर्म होना चाहिए। धर्म का अभिप्राय ईश्वर के साथ एकता कायम करना है। वह एक प्रचण्ड शक्ति है। इसलिए राजनीति में धर्म को प्रविष्ट कराने का अर्थ था न्याय और सत्य की ओर उत्तरोत्तर प्रगति करना क्योंकि धार्मिक व्यक्ति किसी भी प्रकार के उत्पीड़न और शोषण को सहन नहीं कर सकता। गाँधी ने कहा, ''मेरा प्रेरक भाव शुद्ध धार्मिक है। जब तक मैं अपने को समस्त मानव जाति के साथ एकरूप अनुभव नहीं कर लूँ, मै धार्मिक जीवन व्यतीत नहीं कर सकता और ऐसा मेरे लिए तब तक संभव नहीं है जब तक राजनीति में भाग न लूँ।'' उन्होंने कहा कि बहुत से धार्मिक व्यक्ति जिनके सम्पर्क में मैं आया हूँ वे छद्म वेश में राजनीतिज्ञ होते हैं परन्तु मैं राजनीतिज्ञ के वेश में धार्मिक व्यक्ति हूँ।

प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान, एस.एस. जैन सुबोध सांध्य महाविद्यालय, जयपुर

दक्षिणी अफ्रीका में तथा भारत में वह सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र के सभी अन्यायों के विरूद्ध आजीवन संघर्ष करते रहे। इसके लिए उन्होंने सत्य और अहिंसा के धार्मिक साधनों का प्रयोग किया तथा साध्य के समान साधन की पवित्रता और नैतिकता बनाए रखने पर बल दिया। उन्होंने अपने धार्मिक विश्वासों, आस्तिकता, ईश्वर में आस्था, श्रद्धा, आत्मबल की प्रधानता और श्रेष्ठता, अद्वैत की कल्पना, सर्वत्र चराचर जगत में एक ही सत्ता का व्याप्त होना, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह आदि के सिद्धान्तों को राजनीतिक क्षेत्र में लागू किया। गाँधी जी ने कहा है कि ''जो यह कहते है कि धर्म का राजनीति से कोई संबंध नहीं है वे यह नहीं जानते कि धर्म का क्या अर्थ है ? जो देश भक्ति की भावना से अपरचित है वह अपने कर्तव्य व धर्म को नहीं जानता। मैं इसमें विश्वास नहीं करता कि आध्यात्मिक नियम एक विशेष क्षेत्र में कार्य करता है। इसके विपरित यह जीवन के सभी सामान्य कार्यों में अभिव्यक्त होता है।'' अतः गाँधी राजनीति को धार्मिक क्षेत्र के समान आध्यात्मिक और शुद्ध बनाना चाहते थे। उन्होंने सत्य, अहिंसा एवं मानववाद के मूल्यों के अनुकूल राजनीति के आध्यात्मीकरण का समर्थन किया जिसके फलस्वरूप राजनीतिक क्रियालाप को ऐसा स्तर प्राप्त हो सके, जो परसेवा संलग्न एवं जनप्रतिबद्ध कर्मण्यतावादियों के प्रयासों को नवीन प्रतिमा दे।

गाँधी का दृढ़ विश्वास था कि धर्म में विश्वास के अभाव में किसी भी व्यक्ति का अस्तित्व संभव नहीं है अतः गाँधी की दृष्टि में नास्तिकता की अवधारणा का कोई महत्व नहीं है। उनके लिए राजनीति नीति का ही विस्तृत रूप है। धर्म को राजनीति द्वारा निर्देशित करना या राजनीति को धर्म से प्रभावित करना दोनों स्थितियाँ उन्होंने अस्वीकारी। वे नैतिक मूल्यों से अनुप्राणित ''राजनीति को आध्यात्मीकृत'' करने की दिशा में प्रतिबद्ध थे। गाँधी का राजनीतिक चिन्तन राजनीति के आध्यात्मीकरण से प्रारम्भ होता है एवं उसी मर्यादा में जीवन्त है। इस सन्दर्भ में मौलिकता यह है कि गाँधी ने कर्मण्यता एवं व्यवहार को भी नीतिपरक नियमों एवं नैतिक सद्प्रवृत्तियों से अनुप्रमाणित बनाने का प्रयास किया। उनकी संत शैली स्वयं आध्यात्मीकरण का प्रमाण मानी जा सकती है। वे राजनीति को नीतिशास्त्र की एक उपशाखा मानते थे। इस रूप में राजनीति सामाजिक सेवा की कला है एवं आत्म जागृति का एक सृजनात्मक संयंत्र।

भारत की सामयिक राजनीतिक वास्तविकता के व्यापक संदर्भ में गाँधी ने स्वीकारा कि स्वतन्त्रता आन्दोलन को किसी भी स्थिति में शांतिपूर्ण एवं सहिष्णु आग्रहों से विलग्न करना राष्ट्रीय हित के प्रतिकूल होगा। दक्षिणी अफ्रीका में उन्होंने सत्य, अहिंसा एवं विश्वसनीयता के आधार पर प्रजातिवादी दुराग्रह के विरूद्ध विरोध एवं विकल्प को जन आंदोलन का स्वरूप देने में अपने प्रयोग एवं परीक्षण को क्रियान्वित किया। हिंसक विरोध की विवशता एवं असहाय स्थिति से गाँधी परिचित थे। वे विरोध के प्रतिमानों में प्रार्थना-पत्र, विरोधी-पत्र, प्रतिनिधि मण्डल द्वारा माँगों के लिए संवैधानिक प्रयास एवं संसदीय समर्थनों द्वारा माँगों के अनुमोदन के समर्थक थे किन्तु दक्षिणी अफ्रीका के परीक्षणों में ही गाँधी ने काले कानून की सविनय अवज्ञा को सत्याग्रह की आत्मा माना। उन्होंने संवाद राजनीति को संत शैली में समायोजित किया।

गाँधी मानते थे कि राजनीति में आध्यात्मीकरण के फलस्वरूप कष्ट अनिवार्य है। त्याग एवं धैर्य स्वयं परीक्षण है। शुद्ध साधन व्यक्तित्व की परिपक्वता एवं वास्तविक शक्ति के प्रमाण है। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह से प्रशिक्षित व्यक्ति साधनों की सर्वोपरिता को जीवन्त बनाने एवं किसी भी कष्ट को सहन करने को प्रस्तुत हो तो राजनीति का आध्यात्मीकरण व्यवहारिक होता है।

गाँधी साधनों की प्राथमिकता एवं शुद्धि से किसी भी प्रकार का समझौता करने के लिए तैयार नहीं थे। विरोध की परिवर्तित तकनीके, असहयोग, बहिष्कार, स्वदेशी, सत्याग्रह आदि के प्रयोग भी गाँधी अपने मूल्यों की कीमत पर नहीं करते। यदि असहयोग है तो अहिंसात्मक, अवज्ञा है तो सविनय और आग्रह है तो सत्य पर आधारित। इसीलिए वे साध्य और साधनों को अलगाव की स्थिति में नहीं वरन् परिपूरकता एवं सामंजस्यता की स्थिति में ही स्वीकार करते हैं। उन्होंने माना कि अशुद्ध साधनों से कभी भी शुद्ध साध्यों की प्राप्ति नहीं की जा सकती। अतः गाँधी ने नैतिक एवं धर्ममूलक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु साधनों की शुद्धता एवं नैतिकता की अनिवार्यता का समर्थन किया। गाँधीजी ने भारत में सच्चे लोकतंत्र की कामना की। उनका विश्वास था कि सच्चा लोकतंत्र अथवा जनता की स्वराज्य असत्य व हिंसा के उपायों से कभी नहीं आ सकता। केवल अहिंसा से ही सच्चे लोकतंत्र की स्थापना हो सकती है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि महात्मा गाँधी ने राजनीति का आध्यात्मीकरण का केवल विचार ही नहीं दिया वरन् व्यवहार में भी उसे कार्यान्वित करके दिखाया। उन्होंने सत्य, अहिंसा आदि धार्मिक नैतिक सिद्धान्तों का राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में जो सफलतापूर्वक प्रयोग किया उसे विश्वभर के राजनीतिज्ञों ने आश्चर्य और श्रद्धा के साथ स्वीकार किया। एक सन्त राजनीतिज्ञ के रूप में महात्मा गाँधी ने सदैव यही चाहा कि राजनीति से विग्रह, विघटन, विरोध, विद्रोह और विनाश की प्रवृत्तियों का उन्मूलन हो जाए तथा सद्भावना, सहयोग, समन्वय और संगठन तत्वों का अधिकाधिक समावेश हो।

सन्दर्भ सूची :-

1. डा. बी. पट्टाभिसीतारमैया : गाँधी और गाँधीवाद
2. गोपीनाथ धवन : दी पालटिकल फिलासफी ऑफ महात्मा गाँधी, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
3. एम.के. गाँधी : मेरे सत्य के साथ प्रयोग, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
4. सी.एफ. एन्ड्रयूज : महात्मा गाँधी - हिज ऑन स्टोरी
5. शम्भुरत्न त्रिपाठी : गाँधी : धर्म और समाज
6. रोमा रोलां : महात्मा गाँधी
7. वी.पी. वर्मा : आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल एण्ड संस, आगरा